कलमा-ए-तौहीद

अर्थ, महत्व और फज़ीलत

शैख सालेह बिन फौज़ान

मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.

Www.IslamicBooks.Website

कलमा-ए-तौहीद

अर्थ, महत्व और फज़ीलत

शैख सालेह बिन फौज़ान

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road

Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101

Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224

Email :faheembooks@gmail.com

WWW.faheembooks.com

Www.IslamicBooks.Website

जुम्ला हकूक महफ़ूज़ हैं

पुस्तक का नाम : **कलमा-ए-तौहीद** अर्थ, महत्व और फ़ज़ीलत

लेखक : शैख सालेह बिन फौज़ान

अनुवाद : फहद खुर्शीद

प्रकाशन वर्ष : June 2012

कम्पोज़ : अलफहीम कम्प्यूटर
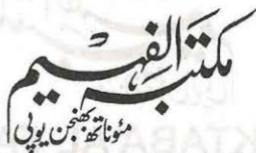
प्रकाशक : मकतबा अलफहीम मऊ

मुल्य :

MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email : maktabaalfaheemmau@gmail.com
WWW.faheembooks.com

Www.IslamicBooks.Website

विषय-सूची

क्या?	कहां?

Www.IslamicBooks.Website

आभार

ज़बान ने कह भी दिया ला-इलाहा तो क्या हासिल

दिल व निगाह मुसलमान नहीं तो कुछ भी नहीं

बहुत समय से मेरी इच्छा थी कि इस्लाम की बुनियाद, कलमा-ए-तौहीद (प्रभु को एक मानना) से सम्बंधित कोई ऐसी किताब उपलब्ध हो जाए जिसमें इस कलमे के वास्तविक अर्थ की जानकारी हो जाए। इस विषय पर मुझे एक किताब मिली जो श्री शेख अब्दुल्लाह फौज़ान मिम्बर सीनियर उलमा कोन्सिल सऊदी अरब ने लिखी थी। मेरी इच्छा थी कि इस किताब का हिन्दी अनुवाद होना चाहिए। जिससे उर्दू पढ़ने वालों को कलाम-ए-तौहीद के वास्तविक अर्थ की जानकारी हो। मैंने इस बारे में अपने दोस्त हाफिज़ नासिर महमूद अनवर से प्रार्थना की कि इस किताब का हिन्दी अनुवाद होना चाहिए। उन्होंने असीम परिश्रम से इस किताब का उर्दू में अनुवाद किया अब यह हिन्दी में आपके सामने प्रस्तुत है। अल्लाह उनका भला करे।

इस किताब में कलाम-ए-तौहीद का स्थान व स्थिती उसका मान सम्मान और उसके वास्तविक अर्थ और मांग का वर्णन है इसके अतिरिक्त यह भी वर्णन है कि कलाम-ए-तौहीद का मानना कब लाभदायक होता है और कब नहीं? और यदि इस कलमे की वास्तविक मांगों के अनुसार उसको माना जाए तो समाज में इसका क्या प्रभाव होगा।

मेरी यह प्रार्थना है कि अल्लाह इस किताब के विद्वान लेखक और अनुवादक की कोशिशों को स्वीकार करें और इस किताब को हमारे लिए हिदायत और निजात का साधन बनाए। आमीन!

Www.IslamicBooks.Website

भूमिका

खुतबा मसनून के बाद स्पष्ट हो कि प्रभु ने हमें अपनी याद में लीन रहने का आदेश दिया है और याद करने वालों की प्रशंसा की है। इसी कारण उसने अत्यधिक बड़ा फल देने का वादा किया गया है। इसलिए प्रभु ने अपनी याद में लीन रहने का आदेश दिया है। बल्कि फर्ज़ इबादत (आवश्यक भक्ति) के बाद भी याद और गुणगान करने का आदेश दिया है।

अल्लाह का इर्शाद है।

अनुवादः और जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो उसके बाद भी खड़े-खड़े और लेटे-लेटे (हर स्थिति) में अल्लाह तआला को याद करते रहो।

इसके अतिरिक्त कहा है–

अनुवादः और तुम हज के अरकान पूरे कर चुको तो अल्लाह को ऐसे याद किया करो जैसे (अतीत) में तुम अपने पूर्वजों को याद किया करते थे। बल्कि उनसे भी बढ़ कर अल्लाह को याद किया करो।

इसके अतिरिक्त हज करते समय भी विशेष कर अल्लाह की याद में खोए रहने का आदेश देते हुए कहा है–

अनुवादः जब तुम अरफ़ात से लौटो तो (मुज़दल्फा में) मशअरे हराम के समीप अल्लाह तआला को खूब याद करो।

इसके अतिरिक्त कहा है–

अनुवादः और उन चौपायों पर जो अल्लाह तआला ने उन्हें दिए हैं निश्चित (कुर्बानी के) दिनों में (ज़बह करते समय) अल्लाह तआला की याद

Www.IslamicBooks.Website

करो।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कहना है-

अनुवाद : हज के गिने चुने दिनों में अल्लाह को खूब याद करो।

बल्कि वास्तविकता यह है कि नमाज़ पढ़ने का आदेश भी अल्लाह तआला की याद में (लीन रहने) के कारण ही दिया गया है।

अल्लाह का कथन है-

अनुवाद : और मेरी याद के लिए नमाज़ स्थापित करो।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कहना है-

अनुवाद : अय्यामें तशरीक (कुरबानी के दिन) खाने पीने और अल्लाह की याद के दिन हैं।

अल्लाह का कथन है-

अनुवाद : ऐ मुसलमानों! अल्लाह की याद बहुत किया करो और शाम सवेरे उसको याद किया करो।

वास्तवकिता यह है कि सबसे श्रेष्ठ याद "ला-इला-ह इल्ललल्लाह वहदहू ला शरी-कलहू" के शब्द हैं, जैसा कि नबी स.अ.व. ने उसकी व्याख्या की है।

आपने कहा : अरफे के दिन की प्रार्थना सारी प्रार्थनाओं के शब्दों से अच्छी है और सबसे अच्छी प्रार्थना के शब्द वह हैं जिनके साथ मैं प्रार्थना करता हूं और मुझसे पहले नबी करते थे।

वह प्रार्थना यह है-

अनुवाद : एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई अल्लाह सदा रहने वाला नहीं, उसका कोई भागीदार नहीं, शासक वही है हर प्रकार की तारीफ़ व प्रशंसा केवल उसी के लिए विशेष है और वही हर वस्तु पर सामर्थ्य है।

Www.IslamicBooks.Website

याद रहे कि कलाम-ए-तौहीद (अल्लाह को एक मानने वाले शब्द) बहुत श्रेष्ठ हैं याद और अल्लाह की याद के हर प्रकार में इसका स्थान और मान सबसे श्रेष्ठ और ऊंचा है।

कलाम-ए-तौहीद के साथ कुछ आदेश भी जुड़े हैं, उसकी कुछ शर्तें हैं कुछ उद्देश्य और मांगें हैं। इस कलमे का उद्देश्य यह नहीं कि इसका जाप केवल जीभ से ही किया जाए।

इस कलमें के महत्व के लिए मैंने आवश्यक समझा कि इस विषय पर व्याख्या से महत्वपूर्ण बातें कलमे के हवाले की जाएं।

मैं अल्लाह से आशा करता हूं कि वह मुझे और आपको इस कलमे के आदेश को पूरा करने और उसके वास्तविक अर्थ को जानने, इसके अतिरिक्त हमारा सामूहिक और व्यक्तिगत जीवन इसके वास्तविक उद्देशों के अनुसार बिताने का सौभाग्य प्रदान करे।

अगले पृष्ठ में इस कलमा-ए-तौहीद पर बहस के बीच निम्न बातों को उजागर (स्पष्ट) किया जाएगा।

१. कलमा-ए-तौहीद स्थान एवं दर्जा

२. कलमा-ए-तौहीद की श्रेष्ठता

३. कलमा-ए-तौहीद की मात्राएं, ज़ेर, ज़बर, स्तम्भ और उसकी शर्तें

४. कलमा-ए-तौहीद का अर्थ और उसके उद्देश्य

५. कलमा-ए-तौहीद के प्रभाव

Www.IslamicBooks.Website

१. कलमा–ए–तौहीद का स्थान व पद

यह एक ऐसा कलमा है जिसकी घोषणा सारे मुसलमान जीवन भर अज़ान, तकरीर, खुतबात और अपनी बातों में खुले आम करते हैं, इस कलमे को यह प्रमुखता भी प्राप्त है कि पृथ्वी और आकाश की स्थापना इसके साथ है और उसी के लिए सारे प्राणियों को पैदा किया गया है। इसके अतिरिक्त अल्लाह ने अपने समस्त पैगम्बरों को कलमा–ए–तौहीद देकर भेजा, अपनी पवित्र पुस्तकें उतारीं और अपने कानून लागू किए। कलमा–ए–तौहीद ही के लिए कयामत के दिन कर्मों का वज़न करने के लिए ही तराज़ू रखी जाएगी और कर्म पत्र हाथों में दिए जाएंगे। इसके अतिरिक्त स्वर्ग और नर्क अस्तित्व में आएंगे।

यही वह कलमा है जिसके कारण प्राणी दो श्रेणियों में बट जाएंगे। (इस कलमे को मानने वाले) मुसलमान होंगे और (इसको नकारने वाले) काफिर होंगे। ज्ञात हुआ कि सृष्टि की रचना का उद्देश्य ही कलमा–ए–तौहीद पर है। आदेशों और सज़ा अथवा पुरस्कार भी इसी कलमे पर टिके हैं। यह कलमा ऐसी सत्य वास्तविकता है कि इसी के कारण सृष्टि को रचा गया।

कयामत के दिन कलमा–ए–तौहीद और उसके हक़ों के बारे में सवाल होगा और हिसाब व किताब होगा और सज़ा और इनाम दिया जाएगा। यही वह केन्द्रिय बिन्दू है जिस पर काबे की इमारत टिकी है और इसी पर इस्लाम की नींव रखी है और इसी कलमे को बुलन्द रखने के लिए शत्रुओं के साथ जंग करते हुए तलवारों को म्यान से निकाला जाता है। इसके अतिरिक्त अल्लाह की ओर से उसके समस्त लोगों के लिए ज़रूरी है कि वह इस कलमे की रक्षा करें। यही कलमा इस्लाम है यह स्वर्ग की कुंजी है और इसी के बारे में पहली और बाद में आने वाली कौमों से

Www.IslamicBooks.Website

पूछताछ होगी।

कयामत के दिन अल्लाह के सामने उपस्थित होने के बाद लोग उस समय तक इधर उधर न होंगे जब तक उनसे दो प्रश्न न कर लिए जाऐंगे।

पहला प्रश्न यह होगा कि तुम किसकी उपासना करते थे? दूसरा प्रश्न यह होगा कि तुमने अल्लाह के रसूलों को क्या उत्तर दिया था?

पहले प्रश्न के उत्तर की मांग यह है कि हर मनुष्य को कलमा–ए–तौहीद की पूरी जानकारी होनी चाहिए। ज़बान से उसको स्वीकार करना चाहिए और (सत्य मन से उसकी मांग के अनुसार) कर्म करना चाहिए।

दूसरे प्रश्न के उत्तर की मांग यह है कि बिना किसी शक के मुहम्मद स.अ.व. अल्लाह के (अन्तिम) रसूल हैं। उनकी रिसालत को सत्य मन से माना जाए और उनके आदेश का पालन किया जाए और किसी प्रकार से भी उसके विरूद्ध न किया जाए।

यही वह कलमा है जो इस्लाम और कुफ्र के बीच की सीमा है। यही संयम का कलमा है और यही वह लोहे का कणा है जिसे इब्राहीम अ० ने दृढ़ता से पकड़ा था।

अल्लाह का कहना है–

अनुवाद : और इब्राहीम अ० ने इस कलमे को एक स्थाई यादगार के तौर पर छोड़ा ताकि अल्लाह की ज़ात में दूसरों को शरीक करने से बचें।

यही एक ऐसा कलमा है कि अल्लाह ने भी अपनी ज़ात के लिए उसके साथ गवाही दी है और अल्लाह के पैदा किए प्राणियों, फरिश्तों, विद्वानों ने भी उसकी गवाही दी है।

अल्लाह तआला का कहना है–

अनुवाद : अल्लाह तआला न्यान के अनुसार यह गवाही देते हैं

Www.IslamicBooks.Website

वास्तविकता यह है कि उसके सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं है इसके अतिरिक्त फरिश्ते और विद्वान भी यही गवाही देते हैं कि उसके अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं, वह सब पर विजयी और (हिकमत वाला) तत्वदर्शी है।

यह निष्ठा का कलमा है, सत्य की गवाही और सत्य की दावत है इसके अतिरिक्त शिर्क से बचाव के लिए कहता है और यही कलमा सृष्टि की रचना का कारण है।

जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है–

अनुवाद : और मैंने जिन्नों और इंसानों को केवल अपनी उपासना के लिए पैदा किया है।

और इसी उद्देश्य के लिए पैगम्बरों को भेजा और आसमानी किताबों को उतारा है।

जैसा कि अल्लाह का कहना है–

अनुवाद : (ऐ पैगम्बर!) हमने आपसे पूर्व जितने भी रसूल भेजे हैं, हम उनमें से हर एक की ओर अपना यही हुक्म भेजते थे कि वास्तविकता यह है कि मैं ही एक खुदा हूं इसलिए केवल मेरी ही उपासना करो।

इसके अतिरिक्त कहा है–

अनुवाद : वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे नबूवत के लिए चुन लेता है फिर उस पर अपने फरिश्तो द्वारा अपने आदेश भेजता है कि अल्लाह की ओर से लोगों को जानकारी दी जाए कि अल्लाह एक है, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, इसलिए केवल मुझसे डारो।

इब्न ऐना रह० का कथन है: बन्दों में से किसी बन्दे पर अल्लाह का इससे बड़ा उपकार और कोई नहीं कि अल्लाह ने अपने बन्दों को कलमा-ए-तौहीद की पहचान कराई। कलमा-ए-तौहीद का स्थान स्वर्ग वालों के लिए इस प्रकार है जैसा कि संसार वालों के लिए ठंडा पानी। जो

Www.IslamicBooks.Website

मनुष्य सच्चे मन से इसको मानेगा, उसका माल और उसका खून सुरक्षित हो जाएगा और जो मनुष्य उसको नकारेगा तो उसका माल और उसका खून सुरक्षित नहीं है।

आपका कहना है–

अनुवाद : जो मनुष्य (ज़बान के साथ) कलमा–ए–तौहीद को मानता है और अल्लाह के सिवा सारे झूठे माबूदों को नकारता है तो उसका माल और उसका खून (दूसरों पर) हराम है। इसके अतिरिक्त अल्लाह के यहां इसका हिसाब होगा। (मुस्लिम)

यही वह कलमा है जब कुफ्फारों को इस्लाम की दावत दी जाती है तो उनसे सर्वप्रथम यही मांग की जाती है कि वह कलमा–ए–तौहीद को मानें।

सही हदीस में है कि जब नबी स.अ.व. ने मुआज़ रज़ि० को यमन भेजा तो उनसे कहा कि–

"तुम ऐसे लोगों के यहां जा रहे हो जो किताब वाले हैं सबसे पहले उनसे दावत देते हुए तुझे यह कहना होगा कि वह इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं है।" (बुखारी, मुस्लिम)

इस हदीस की रौशनी में दीने इस्लाम में कलमा–ए–तौहीद के स्थान का अनुमान होता है और मनुष्य के जीवत में इसका महत्व स्पष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त बन्दों पर जो चीज़ फर्ज़ होती है वह यही कलमा है। इसे ही दीन में मौलिक स्थान प्राप्त है और सारे कर्मों का अधार इसी कलमे पर है।

☆☆☆

Www.IslamicBooks.Website

तौहीद कामिल (पूर्ण ऐकेश्वरवाद)

तौहीद को मानने का ऊंचा स्थान यह है कि मनुष्य की हर प्रकार की उपासना और उनका जीवन मरण सब अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के लिए हो जाए।

अल्लाह तआला का कहना है–

"(ऐ पैगम्बर!) कह दीजिए! बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी मेरा जीना और मरना केवल उस अल्लाह के लिए है जो सारे संसार को पालने वाला है।" (सूरः अनआमः १६३)

२. कलमा–ए–तौहीद की फज़ीलत

कलमा-ए-तौहीद का स्तर बहुत श्रेष्ठ है और अल्लाह तआला के यहां इसका विशेष स्थान है, जो मनुष्य सच्चे मन से कलमा-ए-तौहीद को मानता है तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाखिल करेंगे और जो आदमी झूठ से कलमा का इकरार करता है तो सांसारिक दृष्टि से उसका खून और उसका माल सुरक्षित है परन्तु अल्लाह के यहां उसका हिसाब होगा।

यह कलमा बहुत छोटा है। उसके शब्द बहुत कम हैं, ज़बान से कहना कुछ मुश्किल नहीं, परन्तु वज़न की दृष्टि में यह बहुत भारी है।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह स.अ.व. ने कहा :

"मूसा अ० ने अल्लाह के दरबार में दुआ करते हुए कहाः 'ऐ पालने वाले! मुझे ऐसे कलमात (शब्द) प्रार्थना के लिए बता दे जिनके साथ मैं तुझे याद करूं और तुझसे प्रार्थना करूं।' अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने कहाः ऐ मूसा! यदि सातों आसमान और मेरे अतिरिक्त जो कुछ इनमें है इसके

Www.IslamicBooks.Website

अतिरिक्त सातों ज़मीनें, सातों तराजू के एक पलड़े में रखदी जाएं और कलमा-ए-तौहीद "ला इला–ह इल्लल्लाहू" दूसरे पलड़े में रख दिया जाए तो कलमा-ए-तौहीद वाला पलड़ा झुक जाएगा।" (मुस्तदरिक हाकिम इब्ने हिबान)

यह हदीस इस बात को स्पष्ट करती है कि ला इला-ह इल्लल्लाहु ही सबसे अच्छा ज़िक्र है।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की हदीस में है कि नबी अकरम स.अ.व. ने कहा है :

अरफे के दिन की दुआ सारी दुआओं से अच्छी है और सबसे अच्छे दुआ के वह शब्द हैं जिनके साथ मैं दुआ करता हूं और मुझसे पहले दूसरे नबी करते थे। (वह दुआ यह है)

अनुवाद : केवल अल्लाह ही सच्चा माबूद है, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, समस्त संसार पर उसी का राज है उसी के लिए हर प्रकार की प्रशंसा है और वह सर्व शक्तिमान है।

वज़न में इस कलमे के भारी होने पर वह हदीस रौशनी डालती है जिसको इमाम तिर्मिज़ी ने लिखा है और सनद के अनुसार इसे सही बताया है, इसके अतिरिक्त इमाम नसई और हाकिम ने भी इसे बयान किया है। इमाम हाकिम ने उसको "मुस्लिम" की शर्त पर सही बताया है।

इस रिवायत को अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने बयान किया है कि नबी स.अ.व. ने फरमायाः

"मेरी उम्मत में से एक व्यक्ति को कयामत के रोज़ सारे प्राणियों के सामने बुलाया जाएगा और उसके सामने कर्मो के निन्नान्वे दफतर फैला दिए जाएंगे। हर दफतर की लम्बाई चौड़ाई इतनी होगी जहां तक नज़र पहुंचे। फिर उससे पूछा जाएगा क्या तुम इन कर्मों में से किसी कर्म को गलत मानता है? वह जवाब देगा, ऐ पालनहार! फिर उससे पूछा जाएगा क्या अपने इस अमल पर तुझे कुछ कहना है या तेरी कोई नेकी है? वह

Www.IslamicBooks.Website

डरते हुए उत्तर देगा बिल्कुल नहीं। अतएव उसे बताया जाएगा कि क्यों नहीं। बेशक हमारे पास तेरे अच्छे कर्म हैं और तुझ पर कदापि अत्याचार नहीं होगा फिर उन अच्छे कर्मों में से कागज़ का एक टुकड़ा निकाला जाएगा जिसमें लिखा होगाः

(मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला ही सच्चा माबूद है उसके अतिरिक्त मैं यह भी गवाही देता हूं कि मुहममद स.अ.व. अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।)

वह व्यक्ति बोल उठेगा "ऐ पालने वाले! इन दफतरों के सामने इस कागज़ के टुकड़े की क्या हैसियत होगी उससे कहा जाएगा कि तुझ पर बिल्कुल भी अत्याचार नहीं होगा, अतएव उन सारे दफतरों को एक पलड़े में और कागज़ के टुकड़े को दूसरे पलड़े में रखा जाएगा, दफतरों का पलड़ा हल्का हो जाएगा और कागज़ का टुकड़ा भारी सिद्ध हो जाएगा।" (तिर्मिज़ी)

इस महान कलमे की बहुत सी श्रेष्ठताएं हैं उनमें से कुछ का वर्णन हाफिज़ इब्ने रजब ने अपने रिसाले "कलमा-तुल-इखलास" में किया है और हर श्रेष्ठता के साथ तर्क भी दिए हैं, उनमें कुछ निम्न हैं:

कलमा-ए-तौहीद स्वर्ग प्राप्ति के लिए मुल्य की हैसियत रखता है।

जिस मनुष्य की ज़बान पर उसके जीवन के अन्तिम क्षण में कलमा-ए-तौहीद होगा वह जन्नत में जाएगा।

कलमा-ए-तौहीद दोज़ख से छुटकारा दिलाने वाला है।

कलमा-ए-तौहीद सारे अच्छे कर्मों में से सबसे बड़ी अच्छाई है।

कलमा-ए-तौहीद पापों और गलतियों को खत्म कर देता है, मोमिन (ईमान वाले) के मन में ईमान के वृक्ष को हरा भरा रखता है और पापों के दफतर पर भारी होता है।

कलमा-ए-तौहीद सारे पर्दे समाप्त करते हुए अल्लाह के दरबार में

Www.IslamicBooks.Website

प्रवेश का द्वार है इस कलमे का ज़िक्र करने वाले मनुष्य की ताईद करते हैं और नबियों ने जिन बातों को उच्च माना है, उन सबसे यह कलमा अफज़ल (श्रेष्ठ) माना है।

कलमा-ए-तौहीद सब गुणगान और ज़िक्र से श्रेष्ठ है।

कलमा-ए-तौहीद को तमाम कलमों पर श्रेष्ठता प्राप्त है, उसका गुणगान करने से कई गुना सवाब मिलेगा और उसका सवाब दासों को आज़ाद करने के बराबर बताया गया है और उसका गुणगान करने वाला शैतान के भ्रमों से सुरक्षित रहता है।

कलमा-ए-तौहीद कब्र की घबराहट से दूर रखता है कयामत के मैदान की भयानकता से बचाता है।

ईमान वाले जब कब्रों से उठ खड़े होंगे तो कलमा-ए-तौहीद उनका ज़िक्र होगा अर्थात वह कलमा-ए-तौहीद पढ़ते हुए उठेंगे।

कलमा-ए-तौहीद की श्रेष्ठताओं में से उसकी एक मुख्य श्रेष्ठता यह भी है कि जो मनुष्य इसका गुणगान करता है कयामत के दिन उसके सम्मान में जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे वह जिस दरवाज़े से चाहेगा चला जाएगा।

कलमा-ए-तौहीद का गुणगान करने वालों ने यदि उसके हकों को पूरा करने में कुछ कमी की होगी और इस कारण से उन्हें नर्क में डाल दिया जाएगा तो अन्त में उन्हें इस कलमें के कारण नर्क से निकाल कर स्वर्ग में भेज दिया जाएगा।

कलमा-ए-तौहीद की श्रेष्ठताओं में से यह एक छोटी सी झलक थी, जिसका वर्णन इमाम इब्ने रजब ने अपनी किताब कलमा-तुल-इखलास में किया है और उन सारी श्रेष्ठताओं के तर्क भी प्रस्तुत किए हैं।

Www.IslamicBooks.Website

३. कलमा–ए–तौहीद की मात्राएं, ज़ेर, ज़बर, स्तंभ और शर्तें

अ.कलमा–ए–तौहीद की मात्राएं

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि शब्द के अर्थ को समझना वाक्यों की मात्राओं पर निर्भर करता है इसी कारण विद्वानों ने "ला इला–ह इल्लल्लाहु" की मात्राओं के बारे में लिखा है। उन्होंने कहा है कि शब्द "ला" किसी भी वस्तु के नकारने के लिए है और "इलाह" अक्षर "ला" की संज्ञा है जिसके अन्त में ज़बर है इस संज्ञा का पता देने वाला छिपा हुआ है अर्थात वह शब्द हक है अर्थात अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई सच्चा बादशाह नहीं। उसके अतिरिक्त शब्द "इल्लल्लाहु" पता देने वाला है और शब्द अल्लाह के अन्त में पेश है और इलाह से मुराद वह ज़ात है जिसकी इबादत का इरादा किया जाता है और वह ऐसी ज़ात है जिसकी ओर मन आकर्षित होते हैं और उसका इरादा करते हैं ताकि कोई लाभ हो या किसी हानि से बचा जा सके वे लोग गलती पर हैं जो इसकी सूचना "उपस्थित" या "माबूद" को छुपा हुआ मानते हैं।

यह इसलिए भी ठीक नहीं है क्यों कि अधिकता के साथ बुत और कब्रें आदि उपस्थित हैं। जिनकी पूजा की जाती है परन्तु सही सत्य माबूद तो केवल अल्लाह तआला ही है और इसके अतिरिक्त सारे माबूद झूठे हैं और उनकी पूजा करना गलत है, कलमा-ए-तौहीद के दोनों हिस्सों का यही उद्देश्य है।

ब.ला इला–ह इल्लल्लाहु के दो स्तंभ

कलमा-ए-तौहीद दो स्तंभों पर टिका है, पहला हिस्सा ना पर है और दूसर हां पर है।

ना का अर्थ है कि अल्लाह के अतिरिक्त सारी सृष्टि से अल्लाह के

गुणों को नकारा जाए और हां का अर्थ है कि केवल अल्लाह पाक के लिए अकेला होने को सिद्ध किया जाए कि वही माबूद है और उसके अतिरिक्त "इलाह" जिन्हें मुश्रिकों ने अपना माबूद बना रखा है वह सब के सब झूठ हैं।

अल्लाह तआला का कहना है-

यह (दुआ सुनना और हालात की जानकारी रखना) इस कारण है कि अल्लाह ही सत्य है और अल्लाह के अतिरिक्त लोग जिन्हें पूकारते हैं सब झूठे हैं।

इमाम इब्नुल कय्यम का कथन हैः

इमाम इब्नुल कय्यम कहते हैं कि कलमा–ए–तौहीद ला इला–ह इल्लल्लाहु की प्रमाणित अल्लाह तआला के अकेला होने पर "अल्लाहु इलाह" के प्रमाण से अधिक है क्योंकि "अल्लाहु इलाहुन" का वाक्य अल्लाह तआला के अतिरिक्त दूसरे माबूदों को नकारता नहीं, जबकि ला इला–ह इल्लल्लाहु का कलमा इस बात का अभियाचक है कि खुदाई गुण केवल अल्लाह तआला के लिए खास हों जबकि अल्लाह तआला के अतिरिक्त दूसरे माबूदों को नकारे। ऐसे लोग बहुत बड़ी गलती पर हैं जिन्होंने शब्द इलाह की व्याख्या करते हुए कहा है कि इलाह से अभिप्राय वह ज़ात है जो केवल किसी वस्तु की अनिस्तित्व से अस्तित्व में लाने की शक्ति रखता है।

शैख सुलैमान बिन अब्दुल्लाह का कथन हैः

किताबुत्तौहीद की व्याख्या में वह लिखते हैं, यदि कहा जाए कि शब्द "इलाह" "इलाहिय्या" का अर्थ पूर्णतया स्पष्ट है तो फिर उस व्यक्ति की बात का क्या उत्तर होगा जो कहता है कि शब्द इलाह से अभिप्राय वह ज़ात है जो किसी वस्तु को अनिस्तित्व से अस्तित्व में लाने की शक्ति रखता है?

इनके इस कथन के उत्तर दो प्रकार से हैंः

Www.IslamicBooks.Website

पहला उत्तरः यह कथन नया गढ़ा हुआ है पता नहीं यह किस विद्वान ने बयान किया है? और न ही यह कथन किसी शब्दकोष से है। जबकि विद्वानों और शब्दकोष लिखने वालों ने इसका वही अर्थ बताया है जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं। इस प्रकार यह कथन गलत है।

दूसरा उत्तरः हम शब्द "इलाह" के इस अर्थ को आवश्यक व्याख्या तो कह सकते हैं परन्तु यह उसका सही अर्थ नहीं है स्पष्ट है कि जो ज़ात इलाह है उसके लिए पैदा करने वाला होना अनिस्तित्व से अस्तित्व शक्तिमान होना आवश्यक है और यदि "इलाह" के लिए निम्न दो बातें आवश्यक न हों वह उचित इलाह नहीं चाहे उसका नाम इलाह ही क्यों न रख दिया जाए। परन्तु उसका उद्देश्य यह नहीं है कि जो व्यक्ति इस बात को माने कि वह इलाह है जो अनिस्तित्व से अस्तित्व में लाने पर शक्तिमान है तो वह व्यक्ति इस्लाम में प्रविष्ट हो गया और जांच पड़ताल की रौशनी में स्वर्ग की कुंजी को पा गया। निःसंदेह ऐसा कोई भी नहीं कहता क्योंकि ऐसा कहने से यह सवाल पैदा होता है कि अरब के काफिरों को (जो यह विश्वास रखते थे कि "इलाह" वह है जो अनिस्तित्व से अस्तित्व में लाता है) मुसलमान समझा जाए यदि इस बात को मान लिया जाए जैसा कि कुछ लोगों ने मान लिया है तो हम उन्हें गलत स्थापित कर देंगे, अकली और नकली प्रमाण के साथ उनको रद कर दिया जाएगा।

द. कलमा–ए–तौहीद की शर्तें

कलमा–ए–तौहीद के मानने वालों के लिए निम्न सात नियमों के अनुसार कर्म करने से यह कलमा लाभदायक हो सकता है।

पहली शर्त : इस कलमे के सही और गलत के अर्थ का पता होना चाहिए, जो मनुष्य कलमा-ए-तौहीद को मानता है, परन्तु उसके सही अर्थ से वह अंजान है और न ही उसे सही अर्थ का पता है तो इस दशा में केवल मुंह से इस कलमे को पढ़ना कदापि लाभदायक नहीं हो सकता,

Www.IslamicBooks.Website

इसलिए कि व्यक्ति का विश्वास इस कलमे के उलट है।

इसका उदाहरण इस प्रकार है कि एक व्यक्ति ऐसी भाषा में बात करता है जिसे वह जानता ही नहीं।

दूसरी शर्त : इस कलमे पर अटूट विश्वास हो और पूरी तरह से उसके अर्थ की जानकारी हो, किसी प्रकार के शक की गुंजाईश बिल्कुल न हो।

तीसरी शर्त : इख़्लास (अल्लाह को अकेला मानना) आवश्यक है जो शिर्क का तोड़ करता है और इख़्लास ही कलमे का स्पष्ट प्रमाण है।

चौथी शर्त : इसके अर्थ को सत्य समझा जाए और कपट की छाया भी उस पर न पड़ें। कपटी (जो बाहर से कुछ, मन से कुछ हों) लोग केवल मुख से उसको पढ़ते हैं परन्तु उसके सही अर्थ पर विश्वास नहीं रखते।

पांचवी शर्त : कलमा-ए-तौहीद के साथ अत्यंत प्रेम प्रकट हो और उसके अर्थ के साथ भी प्रेम का मनोभाव दिखे इसके अतिरिक्त खुशी की लहरें दिल और दिमाग़ पर छाई रहें, जबकि कपटी इससे दूर रहते हैं।

छठीं शर्त : कलमा-ए-तौहीद के हक अदा करते समय अपना सर अल्लाह के सामने पूरी तरह झुका देना चाहिए। इसका मतलब उन कर्मों से है जो आवश्यक हैं। इख़्लास और अल्लाह तआला की खुशी के लिए उन्हें पूरा किया जाए यही उसकी मांग है।

सातवीं शर्त : कलमा-ए-तौहीद के अर्थ को मज़बूती के साथ माना जाए, उसके इंकार को नकारा जाए और आदेशों को बिना किसी प्रश्न के माना जाए और उन कार्यों से बचा जाए जिनको शरीअत (अल्लाह द्वारा बनाया कानून) ने रोका है।

विद्वानों ने इन शराइत को किताब और सुन्न्त से लिया है जिनका सम्बन्ध कलमा-ए-तौहीद के साथ है और उनमें इस कलमे के हकों और

Www.IslamicBooks.Website

उद्देशों को स्पष्ट करे उसके अतिरिक्त उन आयतों में वास्तविकता को स्पष्ट किया गया है कि केवल ज़बान के साथ मानना ही काफी नहीं।

४. कलमा–ए–तौहीद का अर्थ और उसके तक़ाज़े

उल्लिखित बहस से यह बात स्पष्ट हो गई है कि कलमा-ए-तौहीद का अर्थ और अनुवाद यह है कि एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद सच्चा नहीं। वही अल्लाह है, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, इसलिए वह पूजने योग्य है। यह उच्च कलमा इस बात को स्पष्ट करता है कि अल्लाह तआला के सिवा दूसरे तमाम माबूद झूठे हैं वह सच्चे माबूद नहीं, इसलिए वह पूजा के लायक नहीं हैं। इसी कारण बहुत से स्थानों पर जहां अल्लाह तआला की पूजा का आदेश दिया गया है वहां अल्लाह तआला के अतिरिक्त दूसरो की इबादत के नकारने का वर्णन हैं, क्योंकि अगर अल्लाह के साथ दूसरों की इबादत भी की जाएगी तो वह पूजा गलत होगी।

अल्लाह तआला का कहना है:

अनुवाद : और तुम अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहराओ।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का फरमान (कथन) है :

अनुवाद : पस जो मनुष्य तागूत (शैतान) को नहीं मानता और अल्लाह तआला पर ईमान रखता है उसे एक ऐसा सहारा मिल जाता है जो कभी नहीं टूट सकता। और अल्लाह तआला सब कुछ सुनता और जानता है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का फरमान है :

अनुवाद : हमने हर उम्मत में कोई न कोई पैगम्बर भेजा है ताकि लोग अल्लाह तआला की इबादत करें और शैतान (गलत रास्ते) से बचें।

Www.IslamicBooks.Website

नबी अकरम स.अ.व. का कहना है :

अनुवाद : जिस मनुष्य ने कलमा-ए-तौहीद को माना और अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे की पूजा का इंकार किया तो उसका माल और उसका खून सुरक्षित हो गए। (मुस्लिम)

इसके अतिरिक्त हर पैगम्बर ने अपनी कौम को संबोधित करते हुए घोषण की :

अनुवाद : (ऐ मेरी कौम!) अल्लाह तआला की उपासना करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई माबूद नहीं।

इसके अतिरिक्त भी और बहुत से तर्क हैं।

इमाम इब्ने रजब रह० का कथन है :

कलमा-ए-तौहीद के अर्थ की छानबीन और व्याख्या यह है जब एक व्यक्ति ज़बान से ला इला-ह इल्लल्लाह को मानता है तो उसे चाहिए कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, ख्याल रहे कि सच्चा माबूद केवल वही ज़ात है, जिसकी आज्ञा का पालन किया जाए, उसके भय और क्रोध के कारण उसकी आज्ञा का उल्लंघन न किया जाए। उसी से प्रेम किया जाए उसी का डर हृदय में हो, उसी की ज़ात से आशाएं बांधी जाएं, उसी पर भरोसा किया जाए, उसी के दरबार में दुआ के लिए हाथ उठाए जाएं, यह सब कुछ अल्लाह इज़्ज़त वाले की पाक ज़ात के लिए ही सही है।

इसी कारण नबी अकरम स.अ.व. ने कुफ्फारे कुरैश से कहा था कि तुम भाषा से इस बात को ज्ञात करो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं। कुफ्फारे कुरैश ने उत्तर में कहा :

अनुवाद : क्या उसने बहुत से माबूदों को एक माबूद बना दिया है? यह बड़ी अदभुत बात है।

मुश्रिकीन भंली-भंति जानते थे कि इस कलमे को स्वीकार करने के

Www.IslamicBooks.Website

बाद तमाम बुतों (और काल्पनिक माबूदों) की इबादत करना गलत होगा उपासना केवल अल्लाह के लिए हो जाएगी जबकि वह ऐसा नहीं चाहते थे।

इस अर्थ की रोशनी में यह सच्चाई स्पष्ट होकर सामने आती है कि कलमा-ए-तौहीद का अर्थ और उद्देश्य यह है कि अल्लाह तआला ही की ज़ात इबादत के लायक है और उसके अतिरिक्त सबकी इबादत छोड़नी होगी। जब एक व्यक्ति कलमा-ए-तौहीद को स्वीकार करता है तो मानो उसने यह घोषणा कर दी की केवल एक अल्लाह की इबादत आवश्यक है और उसके सिवा बूतों, कब्रों, अवलिया और सदाचारियों की उपासना गलत है।

इस व्याख्या के बाद आज के युग में कब्रों के पुजारियों और इन जैसे विचार वाले लागों का यह विश्वास बिल्कुल गलत सिद्ध होगया है कि कलमा-ए-तौहीद का अर्थ यह है कि इस बात को माना जाए कि अल्लाह तआला की ज़ात उपस्थित है या अल्लाह तआला वह है जो अनस्तित्व में से अस्तित्व में लाने की शक्ति रखता हो या उनके निकट कलमा-ए-तौहीद का अर्थ यह है कि सारे संसार का मालिक अल्लाह है। वह यह सोचते हैं जिस व्यक्ति का विश्वास इस प्रकार का है और वह कलमा-ए-तौहीद की व्याख्या इस अंदाज़ से करता है तो उसने कलमा-ए-तौहीद को स्पष्ट कर दिया जबकि वह कर्म से गैरूल्लाह की पूजा करता है, मृत पूर्वजों के बारे में अच्छे विश्वास रखता है और उनकी समीपता पाने के लिए उनकी समाधियों पर जानवर कुरबान करता है उनके नाम की नियाज़ व नज़र देता है उनकी समाधियों पर जाता है और उनकी कब्रों की मिट्टी को पवित्र मानता है।

इन लोगों को समझना चाहिए कि अरब के कुफ्फार भी ऐसा ही विश्वास रखते थे और वह भी मानते थे कि अल्लाह ही सृष्टि का रचयिता है और वही अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने की शक्ति रखता है इसे साथ-साथ वे अल्लाह तआला के सिवा दूसरे माबूदों की पूजा इसलिए

Www.IslamicBooks.Website

करते थे कि वे उन्हें अल्लाह के समीप करने का साधन हैं वे उन्हें अपना पैदा करने वाला नहीं समझते थे और न ही अन्न दाता मानते थे।

ख्याल रहे अल्लाह तआला को हाकिम मानना कलमा-ए-तौहीद के अर्थ का हिस्सा है उसका वास्तविक अर्थ यही है। यदि एक व्यक्ति अपनी पूजा में दूसरों को शरीक करता है परन्तु अधिकार, हुदूद और दूसरे झगड़ों में अल्लाह द्वारा बनाए गए कानूनों के न्याय 'को मानता है तो उसका यह अंदाज़ उसकी नजात का कारण नहीं हो सकता।

यदि कलमा-ए-तौहीद का अर्थ वही है जो ये बताते हैं तो ऐसी हालात में रसूलुल्लाह स.अ.व. और मुश्रिकीन मक्का में कदापि झगड़ा न होता, बल्कि वह तुरन्त रसूलुल्लाह स.अ.व. के आदेश पर अपना सर झुका देते। जब आप उन्हें इस बात का हुक्म देते कि अल्लाह तआला ऐसी ज़ात है जो अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने पर समर्थ है या यह कहते कि इस बात को स्वीकार करो कि अल्लाह तआला मौजूद है, या आप उन्हें यह आदेश देते कि तुम अपनी जान, माल और अधिकारों के झगड़ों का न्याय इस्लाम के कानून के अनुसार करो और आप स.अ.व. उपासना के बारे में चुप रहते लेकिन वे लोग अरबी भषा को भंली भंति जानते थे। क्योंकि वह उनकी मातृभाषा थी। उन्होंने आपके उपदेश और धर्म प्रचार से यह समझा कि यदि उन्हों ने कलमा-ए-तौहीद को स्वीकार कर लिया तो वास्तव में यह (कर्म) बुतों की इबादत को असत्य स्वीकार करने के बराबर होगा और कलमा-ए-तौहीद के शब्द इस प्रकार के नहीं हैं जिनका कुछ अर्थ न हो। यही कारण है कि उन्होंने तौहीद से घृणा प्रकट की और प्रत्यक्ष रूप से बचते हुए कहा :

अनुवाद : क्या उसने बहुत से माबूदों को एक माबूद बना दिया? यह बड़ी अजीब बात है।

जैसा कि अल्लाह तआला ने उनकी स्थिति का निम्न आयत में उल्लेख किया :

Www.IslamicBooks.Website

अनुवाद : जब कभी उनसे यह कहा जाता था कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं तो वह घमंड करते थे और कहा करते थे 'क्या हमने अपने माबूदों को एक शायर और मजनू के कहने पर छोड़ देंगे?

वे इस बात को भंली भांती जानते थे कि कलमा–ए–तौहीद को स्वीकार करने का अर्थ है कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त हर किसी की उपासना को छोड़ दिया जाए, केवल एक अल्लाह को सच्चा माबूद स्वीकार किया जाए। यदि वह कलमा–ए–तौहीद के साथ–साथ बूतों की पूजा भी करते रहते तो वे दो अलग–अलग चीज़ों के वक्ता हो जाते, जबकि वे इस प्रकार की विपरीतता से कोसों दूर भागते थे, परन्तु मौजूदा ज़माने के कब्रों को पूजने वाले इस घिनावनी विपरीतता से घृणा प्रकट नहीं करते। वे एक तरफ तो कलमा–ए–तौहीद को स्वीकार करते हैं और दूसरी ओर कलमा–ए–तौहीद के अर्थ के विरूद्ध मृत लोगों की उपासना करने में कुछ नुकसान नहीं समझते और अनेकों प्रकार की उपासना के साथ खानकाहों में भी जाते हैं पस इन लोगों से अधिक भाग्यहीन कौन होगा? उनसे तो अबू जहल और अबू लहब ही कलमा–ए–तौहीद के अर्थ को भंली–भंति समझते थे।

सारांश यह है कि जो व्यक्ति ज़बान से कलमा–ए–तौहीद को स्वीकार करता है उसका अर्थ जानता है, खुलकर और मन से भी उसके तकाज़ों के अनुसार कर्म करता है, शिर्क नहीं करता, केवल अल्लाह तआला के लिए इबादत करता है उसके अलावा कलमा–ए–तौहीद जिस अर्थ पर टिका है उसके अनुसार कर्म करता है और उस पर पक्का विश्वास रखता है तो ऐसा व्यक्ति वास्तव में सच्चा मुसलमान है। परन्तु जो व्यक्ति कलमा–ए–तौहीद को केवल मुंह से स्वीकार करता है और दिखावे के लिए उसके आदेशों को नज़र में रखते हुए उसको मानता है लेकिन उसके अर्थ पर विश्वास नहीं रखता तो वह व्यक्ति कपटी है और जो व्यक्ति मुंह से तो स्वीकार करता है लेकिन उसका वास्तविक जीवन उसके विरूद्ध है तो यह शिर्क करता है जो उसके अर्थ के विरूद्ध है, इसलिए ऐसा व्यक्ति

Www.IslamicBooks.Website

मुशरिक कहलाएगा। क्योंकि उसके कथन में और कर्म में अन्तर है। यह अति आवश्यक है कि कलमा-ए-तौहीद को स्वीकार करने के साथ-साथ उसके अर्थ से भी परिचित हो, इसलिए कि कलमे के अर्थ और व्याख्या से परिचित होने के बाद ही उसके आदेशों के अनुसार ही वास्तविक जीवन की शुरूआत होती है।

अल्लाह तआला का कहना है :

अनुवाद : वही सिफारिश का अधिकार रखता है, जो सत्य की गवाही दे और लोग इस वास्तविकता को खूब समझते हैं।

कलमा-ए-तौहीद के वास्तविक तकाज़ों के अनुसार कर्म से उद्देश्य अल्लाह तआला की उपासना करना है अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और की उपासना करने से दूर रहना है और कलमा-ए-तौहीद का यही मूल उद्देश्य है। और इस तकाज़ों में से यह भी है कि इबादत, मामले, हराम और हलाल के आदेशों में अल्लाह तआला के कानून के अनुसार अमल किया जाए, और किसी दूसरी शरीअत के कानून के अनुसार नहीं।

अल्लाह तआला का कहना है:

अनुवाद : क्या उनके लिए कोई ऐसे शरीक है जिन्होंने उनके लिए ऐसी दीनी शिक्षा चुनी है जिसका अल्लाह तआला ने आदेश नहीं दिया।

इबादत, मामलात और मुसलमानों के झगड़े चाहे उनका सम्बन्ध उनके व्यक्तियों से हो या साधारण समाज से हो, उनमें अल्लाह तआला के बनाए कानून के अनुसार अमल करे और अपने बनाए कानून को मानने के लायक न समझा जाए।

उद्‌देश्य यह है कि उपासना में हर प्रकार की बिदआत और गलत बातें जिनको इंसान, जिन्न और शैतान मिलकर प्रचार करते हैं उनको कदापि मानने के लायक न समझा जाए और जो मुसलमान व्यक्ति इनमें

Www.IslamicBooks.Website

से किसी बिदअत को उचित मानेगा वह अल्लाह तआला की आज्ञा पालन में अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे को शरीक बना रहा है।

इरशादे बारी तआला है :

अनुवाद : क्या उनके लिए कोई ऐसे शरीक हैं, जिन्होंने उनके लिए दीनी शिक्षा को प्रस्तावित किया है जिसका अल्लाह तआला ने आदेश नहीं दिया?

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है:

अनुवाद : यदि तुम इनका आज्ञा पालन करोगे तो अवश्य तुम मुश्रिक हो जाओगे।

अल्लाह तआला का कथन है:

अनुवाद : उन्होंने अल्लाह तआला के अतिरिक्त अपने विद्वानों, शैखों को अपना रब बना लिया हैं

सही हदीस में लिखा है कि नबी स.अ.व. ने जब अदी बिन हातिम ताई के सामने यह आयत तिलावत की तो उन्होंने कहा:

'ऐ अल्लाह के रसूल! हम उनकी इबादत तो नहीं करते? आपने उनसे पूछा:

"क्या तुम्हारे विद्वान और राहिब उन चीज़ों को हलाल करार नहीं देते थे जिनको अल्लाह ने हराम करार दिया है? तुम उनके हलाल करार देने पर इन चीज़ों को हलाल समझते हो, और जिन हलाल चीज़ो को वह हराम करार देते हैं तुम भी उन्हें हराम समझते हो" उन्होंने हां में उत्तर दिया।

नबी अकरम स.अ.व. ने कहा: यही तो उनकी इबादत है।

शैख अब्दुर्रहमान बिन हसन रह० का कौल:

जब उन लोगों ने अवज्ञाकारी के कामों को अपने विद्वानों का आज्ञापालन करते हुए किया जैसा कि इस उम्मत के लोग करते हैं मानो

Www.IslamicBooks.Website

उन्होंने गैरूल्लाह की पूजा की और विद्वानों को अपना रब समझा।

यही शिर्के अकबर है जो तौहीद के विरूद्ध है।

इससे यह वास्तविकता स्पष्ट होती है कि इन सब चीज़ों को इसलिए मना किया है कि यह सब चीज़ें कलमा-ए-तौहीद के अर्थ के विरूद्ध हैं और इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि मनुष्य द्वारा बनाए कानून से अपने फैसले न करवाए जाएं। मुसलमानों के लिए तो बहुत ज़रूरी है कि वह सारे फैसले अल्लाह की किताब की रौशनी में कराएं और मनुष्य द्वारा बनाए हुए कानून से बचें।

अल्लाह तआला का कहना है:

अनुवाद : यदि तुम (शासकों से) किसी हुक्म के बारे में भिन्नता पाओ तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की ओर लौटा दो।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का कहना है:

अनुवाद : और जिन बातों में तुम्हारी भिन्नता है उसमें निर्णय करना अल्लाह तआला का काम है यह तुम्हारा अल्लाह है जो मेरा भी पालने वाला है।

अल्लाह इज़्ज़त वाले रब ने उन लोगों को काफिर, फासिक और ज़ालिम बताया है और उनके ईमान को नकारा है जो अल्लाह तआला के भेजे हुए आदेशों के अनुसार निर्णय नहीं करते, अल्लाह के भेजे हुए आदेशों के अनुसार निर्णय न करने वाले जब ऐसा करने को उचित समझते हैं या उन्हें अल्लाह तआला के फैसलों से अच्छा मानते हैं तो वह कुफ्र और शिर्क के करने वाले होते हैं, ऐसा करना तौहीद के विरूद्ध है और कलमा-ए-तौहीद की ज़द (विलोम) है और यदि कोई मनुष्य इसको उचित नहीं कहता परन्तु साथ-साथ यह विश्वास रखता है कि अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार निर्णय करना आवश्यक है परन्तु उसका मन उसे अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार निर्णय न करने पर

Www.IslamicBooks.Website

उकसाता है तो यह कम दर्जे का कुफ्र और शिर्क है। इससे भी कलमा-ए-तौहीद के अर्थ और व्याख्या को हानि पहुंचती है।

इस प्रकार कलमा-ए-तौहीद एक पूर्ण कानून है और आवश्यक है कि हर मुसलमान अपनी सारी ज़िन्दगी में न केवल इसको अपने ऊपर लागू करे बल्कि सारी उपासना और जीवन के सारे कार्यों में इसको शामिल रखे। कलमा-ए-तौहीद की केवल यह हैसियत नहीं है कि उसके शब्दों का सुबह शाम जाप हो और बरकत के लिए उसको बार-बार पढ़ा जाए न उसके अर्थ को समझा जाए, न उसके तकाज़ों के अनुसार काम किया जाए, और न ही उसके बताए हुए रास्ते पर चलने का प्रयास किया जए, जैसा कि बहुत से लोग ज़बान से तो कलमा-ए-तौहीद को मानते हैं परन्तु अकीदों और मामलों को इसके विरूद्ध करते हैं।

कलमा-ए-तौहीद का तकाज़ा यह है कि अल्लाह तआला के इन नाम और गुणों को उसकी ज़ात से प्रमाणित किया जाए, जिनके साथ अल्लाह तआला ने अपने नामों और गुणों का वर्णन किया है और जिन नाम और गुणों का वर्णन रसूलुल्लाह स.अ.व. ने किया है।

अल्लाह तआला का कहना है:

अनुवाद : और अल्लाह तआला के अच्छे-अच्छे नाम हैं इसलिए तुम उसे जिस अच्छे नाम से चाहो पुकार लो और उन लोगों को छोड़ दो जो अल्लाह तआला के नामों के बारे में भटके हुए हैं। वह जल्द ही अपने किए का बदला पाएंगे।

फतहुल मजीद में लिखा है कि अरबी भाषा में "इलहाद" का मतलब सीधी राह से दूर होना, अत्याचार और अवहेलना है जबकि अल्लाह तआला के सब नाम और गुण ऐसे हैं जिनके साथ अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को अपनी पहचान करवाई है और वह सारे नाम अल्लाह तआला के कमालात को प्रमाणित करते हैं।

फतहुल मजीद के सम्पादक ने लिखा है कि अल्लाह तआला के नाम

Www.IslamicBooks.Website

व गुणों में इलहाद से तात्पर्य नाम और गुणों का नकारना है या उनके मायने को नकारना या उन्हें झूठ सिद्ध करना या उलटफेर करते हुए उचित रास्ते से दूर करना और कल्पनाओं द्वारा सच से भटकना है। इसके अतिरिक्त (नाम और गुणों) मानव जाति के नामों को मानना है।

जो लोग इलहाद करते हुए अल्लाह के नाम और गुणों का इंकार करते हैं अवहेलना करते हैं या उन्हें झुठलाते हैं और उन बाबरकत नामों के अर्थ (गुणों) पर विश्वास नहीं रखते तो ऐसे लोग जहमिया, मोतज़ला और अशाइरा फिरकों से सम्बंध रखते हैं वास्तव में यह लोग कलमा-ए-तौहीद के अर्थ और व्याख्या का विरोध करते हैं जबकि वास्तव में अल्लाह की वह ज़ात है जिसके नाम और गुणों के साथ वसीला हासिल किया जाता है और दुआएं की जाती हैं।

जैसा कि अल्लाह तआला का कहना है :

अनुवाद : अल्लाह तआला को अच्छे नामों के साथ पुकारो।

जिसके नाम व गुण न हों वह सच्चा माबूद कैसे बन सकता है। उसे कैसे पुकारा जाए और उससे क्यों मांगा जाए?

इमाम इब्नुल कय्यम रह० का कथनः

अहकाम (आदेश) के मसाइल में विद्वान बहुमत के साथ विराध करते हैं परन्तु गुणों की आयात और अहादीस में किसी एक स्थान पर भी विरोध देखने में नहीं आया। इसका कारण यह है कि सहाबा-ए-किराम और ताबईन अल्लाह के गुणों को मानते थे। उनके अर्थ को समझने और अल्लाह के गुणों की वास्तविकता का बोध रखते थे।

यह संयोग इस बात की पुष्टि करता है कि अल्लाह तआला के गुणों की समस्या पूरी तरह स्पष्ट है और इसकी व्याख्या की ओर ध्यान करना अत्यधिक ज़रूरी है। इसलिए कि अल्लाह को एक मानना और रसूलुल्लाह स.अ.व. की रिसालत को मानना तौहीद को मानने में शामिल है। यही कारण है कि अल्लाह तआला और उसके रसूल स.अ.व. ने नाम और

Www.IslamicBooks.Website

गुणों को बहुत अच्छी प्रकार से वर्णन किया है और उसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं।

आदेशों की आयतों के अर्थ और व्याख्या को कुछ विशेष लोग ही जानते हैं जबकि गुणों की आयतों को समझने में खास और साधारण सभी शामिल हैं इसका उद्देश्य उचित अर्थ को समझना है उसकी वास्तविकता और हालत को समझाना नहीं है। (मुख्तसर-अस्सवाइक-अल-मुरसिला, जिल्द-१ पृष्ठ १५)

इमाम इब्नुल कय्यम रह० ने व्याख्या की है कि इस वास्तविकता को प्रकृति, बुद्धि और आसमानी किताबें मानती हैं कि जिस ज़ात में गुण, कमाल न हो वह सच्चा माबूद नहीं हो सकता और न ही सूझ बूझ वाला कहलाने का हकदार है बल्कि वह निन्दनीय है घृणित और अधूरा है।

संसार व प्रलोक में बिल्कुल भी प्रशंसा के योग्य नहीं है। संसार व प्रलोक में स्तुति और प्रशंसा के योग्य केवल वही ज़ात है जिसमें जमाल के गुण और जलाल के गुण अत्यधिक मौजूद हों जिनके कारण वह स्तुति और प्रशंसा के योग्य है और इसी कारण जिन सल्फी विद्वानों ने सुन्नत, अल्लाह के गुण, वसफ उलू और वसफेकलाम पर अनेक किताबें लिखी हैं उन्होंने इनका नाम तौहीद रखा है, क्योंकि (नाम व गुणों) का नकारना वास्तव में उस ज़ात का नकारना है जो सृष्टि का रचयिता है। तौहीद तो बस यही है कि सिफाते कलाम को माना जाए और अल्लाह की ज़ात को तशबीह और बुराईयों से पवित्र माना जाए। (मदारिजुस्सालीकीन, जिल्द १, पृष्ठ २६)

५. कलमा–ए–तौहीद की मान्यता कब लाभदायक होती है?

इससे पूर्व हम कह चुके हैं कि कलमा–ए–तौहीद की मान्यता के साथ आवश्यक है कि उसके उचित अर्थ का परिचय हो और उसके उचित आदेशो के अनुसार कार्य किए जाएं। परन्तु कुछ तर्क ऐसे हैं जिनसे यह वहम होता है कि केवल कलमा–ए–तौहीद की मान्यता काफी है। इस लिए

Www.IslamicBooks.Website

कुछ विद्वान इस वहम के कारण गलत रास्ते पर चलने लगे हैं। इसी वजह से समय का तकाज़ा यह है कि इस वहम को समाप्त किया जाए जिससे उचित स्थिति स्पष्ट हो जाए।

शैख सलमान बिन अब्दुल्लाह इस हदीस के बारे में कहते हैं जो अतबान रज़ि० से मरवी है जिसमें लिखा है:

अनुवाद : जो मुनष्य अल्लाह तआला की खुशी के लिए कलमा-ए-तौहीद को मानता है अल्लाह तआला उस पर नर्क को हराम कर देता है। (बुखारी, मुस्लिम)

शैख सलमान बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि समझ लीजिए की इस विषय की बहुत अधिक हदीसें मिलती हैं जो व्यक्ति "शहादतों" को मानता है उस पर नर्क की आग हराम कर दी जाती है, जैसा कि उपरोक्त हदीस में लिखा है।

हज़रत अनस रज़ि० से कही हुई हदीस है कि नबी स.अ.व. सवारी पर थे और हज़रत मुआज़ रज़ि० आपके पीछे थे आपने मुआज़ रज़ि० को अपनी ओर मुखातब किया, उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल मैं उपस्थित हूं। आपने कहा:

"जो व्यक्ति भी इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद स.अ.व. अल्लाह तआला के रसूल हैं तो अल्लाह तआला उस व्यक्ति को नर्क के लिए हराम कर देता है।"

इसके अतिरिक्त सही मुस्लिम में उबादा रज़ि० से रिवायत है आपने कहा:

"और जो व्यक्ति इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद स.अ.व. उसके बन्दे और रसूल हैं तो अल्लाह तआला उस व्यक्ति को नर्क के लिए हराम कर देता

Www.IslamicBooks.Website

है।"

और इस विषय पर दूसरी हदीसें भी मौजूद हैं, (आपने कहा) "जो मनुष्य शहादतैन को मानता है, वह जन्नत में प्रवेश करेगा।"

(परन्तु) इसमें यह वर्णन नहीं है कि वह नर्क में नहीं जाएगा।

ऐसी हदीसों में उबादा रज़ि० से मरवी हदीस भी शामिल है जो पहले लिखी जा चुकी हैं।

अबू हुरैरा रज़ि० से मरवी हदीस में है कि वह जंगे तबूक में नबी अकरम स.अ.व. के साथ थे......इस हदीस में लिखा है कि रसूल अल्लाह स.अ.व. ने कहा :

"मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं और बिना किसी शक के मैं अल्लाह तआला का रसूल हूं जो मनुष्य इस विश्वास के साथ अल्लाह तआला से मिलेगा (और) शक से दूर होगा तो उसे स्वर्ग से कोई चीज़ नहीं रोक सकेगी।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया की व्याख्या :

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया और दूसरे विद्वानों ने कहा है कि इस विषय की हदीस उस मनुष्य के बारे में है, जिसने (कलमा-ए-शहादत को) माना और उसी पर उसकी मृत्यु हुई जैसा कि उसका तर्क मौजूद है। यदि कलमा-ए-शहादत को मानने वाले के लिए मन की सच्चाई के साथ कलमा-ए-तौहीद को माना तो जन्नत में दाखिल होगा। क्योंकि दिल की नियत के कारण ही मन अल्लाह की ओर झुकता है। जब कोई मनुष्य सच्चे मन के साथ पापों से सच्ची तौबा करता है और इस हालत में वह मर जाता है तो वह जन्नत का अधिकारी है। जबकि इस अर्थ की हदीसें अत्यधिक उपस्थित हैं कि नर्क से उस व्यक्ति को निकाला जाएगा जिसने कलमा-ए-तौहीद को माना होगा और उसके मन में जौ, राई या चने के बराबर ईमान होगा।

Www.IslamicBooks.Website

इसके अतिरिक्त लगातार इस अर्थ की अहादिस भी उपस्थित है कि तौहीद को मानने वाले नर्क में डाले जाएंगे और फिर उससे निकाले जाएंगे।

और इस विषय पर भी हदीसें उपस्थित हैं कि अल्लाह तआला ने इब्ने आदम के सजदे के आसार (वाली जगहों) पर नर्क की आग को हराम बताया है, क्योंकि ये लोग अपनी नमाज़ें अपने सजदे केवल अल्लाह की प्रसन्न्ता के लिए करते थे।

इसके अतिरिक्त इस विषय की भी बहुत सी हदीसें मिलती हैं जो व्यक्ति कलमा-ए-तौहीद और कलमा शहादत को मानता है वह नर्क पर हराम हो जाता है।

अलबत्ता ऐसी हदीस को (कुछ शर्तों के साथ) लिखा जाता है कि कलमा-ए-तौहीद को मानने के बाद भी नर्क में जाने का अर्थ, वह मनुष्य है जिन (के मन) में नेकनियती और विश्वास की कंमी होगी और व्यक्ति नेकनियती और विश्वास की दौलत से दूर होगा तो उसके लिए बराबर यह डर है कहीं वह मृत्यु के समय मुसीबत में न फंस जाए और उसकी हालत (स्वर्ग और नर्क के बीच) आशंकित हो जाए और अधिकतर व्यक्ति नकल करते हुए या आदत के अनुसार कलमा-ए-तौहीद पढ़ते हैं उनके मन में ईमान की मुहब्बत नहीं होती। मौत के समय और कब्र में अधिकतर इस प्रकार के लोग मुसीबत में फंसे होंगे।

जैसा कि एक हदीस में है:

"एक व्यक्ति कहेगा मैंने लोगों से सूना था वह कलमा-ए-तौहीद पढ़ते थे इसलिए मैंने पढ़ लिया।"

मालूम हुआ कि ऐसे लोगों के अधिकतर कर्म दूसरों की नकल में होगे और उन्होंने अपने ही जैसे लोगों की नकल की होगी और ऐसे लोग अल्लाह के इस कथन पर पूरे उतरते हैं:

अनुवाद : हमने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया था हम

Www.IslamicBooks.Website

उन्हीं के पद चिन्हों पर चलते जाएंगे।

इस स्पष्टता के बाद हदीसों की दिखावटी भिन्नता समाप्त हो जाती है।

इन बातों का निचोड़ यह है कि जिस मनुष्य ने नेकनियती और विश्वास के साथ माना और वह किसी पाप पर भी आग्रह नहीं करता (तो उस पर नर्क की आग हराम होगी।) बेशक कलमा–ए–तौहीद (की मान्यता) के लिए नेकनियती और विश्वास आवश्यक है कि उसे हर चीज़ से अधिक से अधिक अल्लाह से प्रेम हो। उसका फल यह होगा कि उसके मन में अल्लाह तआला की ओर से हराम की हुई और अमान्य चीज़ों का ख्याल भी नहीं रहेगा। निश्चित रूप से इस प्रकार के व्यक्ति पर नर्क हराम होगी चाहे उस से पूर्व उसने कितने ही अपराध क्यों न किए हों, क्योंकि इस प्रकार का ईमान तौबा, नेक नियति, मुहब्बत और विश्वास उसके सारे पापों को नष्ट कर देगा। जैसा कि दिन आने पर रात समाप्त हो जाती है।

शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब का कथनः

सामान्य लोगों की नज़र में एक शक यह भी है (कि जिस व्यक्ति ने भी कलमा–ए–तौहीद को मान लिया उसे न तो काफिर कहा जाए और न ही उसे कत्ल किया जाए चाहे वह किसी भी प्रकार का जुर्म करता रहे।) वह (तर्क स्वरूप) कहते हैं कि नबी अकरम स.अ.व. ने ओसामा रज़ि० की भर्त्सना की जब उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को मौत के घाट उतार दिया जिसने ला इला–ह इल्लल्लाहु को स्वीकारा था।

आपने (भर्त्सना करते हुए) कहा क्या तुमने उसे "ला इला–ह इल्लल्लाहु" को मानने के बाद मार डाला।

इसके अतिरिक्त इस विषय में कुछ और हदीस भी तर्क के तौर पर पेश करते हैं, जिससे उद्देश्य यह है कि उस व्यक्ति को कदापि कत्ल न किया जाए जो कलमा–ए–तौहीद पढ़ता है इससे जाहिल लोग यह मानते हैं

Www.IslamicBooks.Website

कि जो व्यक्ति भी कलमा-ए-तौहीद को मानता है उसे न तो काफिर कहा जाएगा, न ही उसे कत्ल किया जाए, चाहे वह कुछ भी करता फिरे।

इसलिए हम उन जाहिल व्यक्तियों की गलत सोच को समाप्त करने के लिए उनसे यह सवाल करते हैं कि क्या आपको पता नहीं रसूलुल्लाह स.अ.व. ने यहदूदियों से जंग लड़ी और उन्हें कैदी बनाया, जबकि वह "लाइला-ह इल्लल्लाहु" को मानते थे। इसके अतिरिक्त आपके सहाबा ने कबीला बनू हनीफा के साथ जंग लड़ी जबकि वह गवाही देते थे कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद स.अ.व. अल्लाह तआला के रसूल हैं। इसी के साथ वह नमाज़ें पढ़ते थे और इस्लाम का दावा भी करते थे और इसी प्रकार का हाल उन लोगों का है जिन्हें अली रज़ि० ने जला डाला, लेकिन आश्चर्यजनक बात तो यह है कि लोग जो जिहालत में बढ़े हुए हैं इस बात को मानते हैं कि जो व्यक्ति कयामत का इंकार करता है वह काफिर और कत्ल के लायक है चाहे वह कलमा-ए-तौहीद ही को क्यों न मानता हो, इसी तरह (उनका कहना है कि) जो व्यक्ति इस्लाम के स्तम्भ को नकारता है वह भी काफिर और कत्ल के लायक है चाहे वह कलमा-ए-तौहीद को क्यों न मानता हो।

इस स्थिति में हम उनसे सवाल करते हैं कि जब कोई व्यक्ति (दीन की) असल को नकारता है तो उसे "ला इला-ह इल्लल्लाहु" का मानना लाभ नहीं देता। तो अगर वह कलमा-ए-तौहीद को नकारता है जो दीने इस्लाम का असल है तो फिर उसे "ला इला-ह इल्लल्लाहु" के मानने से कैसे लाभ हो सकता है। परन्तु वास्तविक्ता यह है कि अल्लाह तआला के दुशमन, हदीसों के अर्थ और व्याख्या से अज्ञान हैं।

मुहम्मद बिन अब्दुलवहाब रह० कहते हैं कि उसामा वाली घटना का उत्तर यह है कि:

"उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को कत्ल किया जिसने इस्लाम को इस ख्याल और डर से माना था कि उसका खून और माल सुरक्षित रहे।

Www.IslamicBooks.Website

जबकि इस्लाम यह आदेश देता है कि उस पर हमला उस समय तक नहीं करना चाहिए जब तक कि उससे इस्लाम के विरूद्ध कोई बांत न दिखाई दे।

उसके लिए अल्लाह ने यह आयात उतारी है:

अनुवाद : ऐ ईमान वालो तुम जिहाद किया करो तो भंली-भांती जांच कर लिया करो।

अर्थात तुम्हें मालूम कर लेना चाहिए। यह आयत इस बात का तर्क है कि ऐसे व्यक्ति को कत्ल करने से रूक जाना चाहिए और तहकीक करनी चाहिए यदि तहकीक के बाद पता लग जाए कि वह इस्लाम का विरोधी है तो उसे कत्ल कर दिया जाएगा और यही "फ त बय्यनू" का अर्थ है।

इस विषय पर और भी हदीसें हैं। हमने उनकी व्याख्या कर दी है कि जो व्यक्ति इस्लाम और तौहीद को प्रकट करता है तो उसे क्षमा कर देना चाहिए, यदि उससे इस्लाम के विरूद्ध बातें प्रकट हों तो फिर वह कत्ल के लायक है।

इसका तर्क यह है:

रसूल अल्लाह स.अ.व. ने कहा:

अनुवाद : (ऐ उसामा) क्या तूने उसे कत्ल कर डाला जबकि उसने "ला इला–ह इल्लल्लाहु" को स्वीकारा था?

इसके अतिरिक्त आपका कहना है:

अनुवाद : मुझे आदेश दिया गया कि मैं उस समय तक लोगों से लड़ाई करूं जब तक वह कलमा–ए–तौहीद को न स्वीकार कर लें।

इसके अतिरिक्त आपने ख्वारीज के बारे में कहा था कि:

"जहां कहीं भी पाओ उन्हें मौत के घाट उतार दो यदि मैंने उन्हें पाया तो मैं उन्हें क़ौमे आद के समान खत्म कर दूंगा।"

Www.IslamicBooks.Website

जब ख्वारीज दूसरे लोगों से अधिक कलमा-ए-तौहीद को पढ़ने वाले थे, यहां तक कि कभी-कभी सहाबा-ए-किराम स्वयं को उनकी तुलना में तुच्छ समझते थे। इसके अतिरिक्त ख्वारिज सहाबा-ए-किराम से "कुरआन व हदीस की" विद्या सीखते थे। लेकिन ख्वारिज को कलमा-ए-तौहीद से कुछ फायदा न हुआ, न अधिक इबादत से और न ही इस्लाम के दावे से वह सुरक्षित रह सके क्योंकि उनसे इस्लाम के कानून का विरोध प्रकट होता था। इसी प्रकार यहूदियों से जंग करने और सहाबा किराम का कबीला बनू हनीफा (के लोगों) से जंग करने की घटनाएं हैं।

हाफिज़ इब्ने रजब रह० का कथन:

हाफिज़ इब्ने रजब अपनी किताब "कलीमतुल इख्लास" में नबी स.अ.व. के इर्शाद के बारे में कि मुझे आदेश दिया गया है कि मैं उस समय तक लोगों से लड़ाई करूं जब तक वह इस बात की गवाही न दें कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद स.अ.व. अल्लाह तआला के रसूल हैं।" के बारे में कहते हैं कि उमर रज़ि० और सहाबा-ए-किराम की एक जमाअत ने यह समझा कि जो व्यक्ति शहादतैन को मानेगा वह एकाकी मान्यता की बिना पर सांसारिक दण्ड से सुरक्षित होगा, इस कारण ज़कात देने से मना करने में सहाबा-ए-किराम ने संकोच किया परन्तु अबू बकर सिद्दीक रज़ि० समझ गए कि इनसे उस समय तक जंग की जाए जब तक वह ज़कात नहीं देते।

नबी स.अ.व. का कथन है "जब वे ऐसे करेंगे तो वे मेरी ओर से अपने खून की सुरक्षा कर लेंगे परन्तु उनको अल्लाह तआला के यहां हिसाब देना होगा।"

और आपका कहना है "ज़कात माल का हक है" और अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने भी यही समझा था। बहुत से सहाबा-ए-किराम ने स्पष्ट रूप से नबी स.अ.व. से (इसी प्रकार) कहा है। उनमें से इब्ने उमर,

Www.IslamicBooks.Website

अनस और दूसरे सहाबा-ए-किराम भी हैं।

नबी स.अ.व. का कहना है :

अनुवाद : मुझे आदेश दिया गया है कि मैं लोगों से उस समय तक लड़ाई करूं जब तक वे इस बात की गवाही न दें कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं और मुहम्मद स.अ.व. अल्लाह के रसूल हैं। इसके अतिरिक्त नमाज़ कायम करो और ज़कात दो।

इसके अतिरिक्त इस (हदीस) पर अल्लाह का यह कथन भी दलील है:

अनुवाद : फिर यदि वे नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें तो उनकी जान छोड़ दो।

इसी प्रकार अल्लाह का यह कथन इस हदीस की दलील है :

अनुवाद : फिर अगर वे तौबा कर लें, नमाज़ के पाबन्द हो जाएं, ज़कात देने लगें तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं।

इस बात में कुछ शक नहीं कि दीनी भाई-चारा प्राप्ति का आधार तौहीद के साथ-साथ आदेशों को पूरा करना है क्योंकि शिर्क से तौबा तब कबूल होती है जब तौहीद उपस्थित हो, इसलिए जब अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने सहाबा किराम के सामने इसे स्पष्ट किया तो उन्होंने अबू बकर सिद्दीक रज़ि० के कथन को ठीक समझते हुए मान लिया। इस प्रकार जब यह वास्तविकता स्पष्ट हो गई कि सांसारिक सज़ा उस व्यक्ति से खत्म नहीं हो सकती जो नितांत रूप से शहादतैन को मानता है, यदि कोई मुसलमान इस्लामी कानून को न माने तो इस्लामी सज़ा का पात्र है, इसी प्रकार कयामत में सज़ा का मसला है।

इब्ने रजब रह० इसके अतिरिक्त कहते हैं कि विद्वानों के एक गिरोह का कहना है कि इन हदीसों का उद्देश्य यह है कि कलमा की मान्यता स्वर्ग में जाने और नर्क से बचाव का कारण है परन्तु कर्म के लिए शर्तों

Www.IslamicBooks.Website

का होना और रूकावटों का समाप्त होना आवश्यक है मगर कभी-कभी शर्तें पूरी न होने के कारण रूकावटों के पाये जाने के कारण यह काम असम्भव हो जाता है। यह कथन हसन और वहब बिन मुनब्बा रज़ि० का है और यही कथन उचित है।

इसके बाद उन्होंने हसन बसरी से कहा, कि उन्होंने (प्रसिद्ध बुद्धिजीवी) फरज़ोक से कहा, जब वह अपनी बीवी को दफना रहा था कि:

"इस दिन के लिए तूने क्या तैयारी की थी? फरज़ोक ने उत्तर दिया कि पिछले सत्तर वर्ष से यही गवाही दे रहा हूं कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद नहीं। हसन ने उत्तर में कहा, तूने अच्छी तैयारी कर रखी है परन्तु इस कलमा-ए-तौहीद की कुछ शर्तें हैं। उनमें से एक यह है कि तुझे पाक दामन औरतों पर आरोप लगाने से बचना चाहिए।"

और हसन को बताया गया कि कुछ लोग इस बात को मानते हैं कि जिस व्यक्ति ने कलमा-ए-तौहीद को माना वह जन्नत में दाखिल होगा। हसन

ने स्पष्ट किया कि जिस व्यक्ति ने कलमा-ए-तौहीद के साथ-साथ अधिकारों और कर्तव्यों को पूरा किया, वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा। हसन ने व्याख्या की कि जिस व्यक्ति ने कलमा-ए-तौहीद के साथ-साथ अधिकार और कर्तव्यों को पूरा किया वह जन्नत में प्रवेश करेगा।

इसके अतिरिक्त वहब बिन मुनब्बा ने उस व्यक्ति को बताया जिसने उनसे यह सवाल पूछा कि क्या "ला इला-ह इल्लल्लाहु" जन्नत की चाबी नहीं है? वहब बिन मुनब्बा ने हां में उत्तर देते हुए कहा कि हर चाबी के दांत होते हैं यदि चाबी के दांत हो तों ताला खुल जाता है यदि नहीं तो ताला नहीं खुलेगा।

(इस किताब के लेखक कहते हैं) मैं समझता हूं कि विद्वानों के जितने

Www.IslamicBooks.Website

कथन लिखे हैं, उनकी रौशनी में वह शक समाप्त हो जाना चाहिए, जिसके कारण लोग कहते हैं कि जो व्यक्ति कलमा-ए-तौहीद को मानता है वह काफिर नहीं है चाहे वह शिर्क जैसे बड़े कामों में से जो चाहे करता फिरे, जैसा कि वर्तमान युग में खानकाहों, सदाचारी पुरूषों की कब्रों पर कलमा-ए-तौहीद के उलट देखने में आते हैं। वास्तव में ऐसे दृश्य कलमा-ए-तौहीद का अर्थ और उद्देश्य के पूरी तरह विरूद्ध है। वास्तव में यह उन लोगों का अन्दाज़ है जिनके मन टेढ़े हैं। ऐसे व्यक्ति संक्षिप्त तर्कों को हुज्जत बना लेते हैं और व्याख्या वाले तर्कों की ओर ध्यान नहीं देते उनका हाल उन जैसे लोगों का है जो अल्लाह की किताब के एक हिस्से को मानते हैं और दूसरे हिस्से को नकारते हैं।

अल्लाह तआला का कहना है :

अनुवाद : अल्लाह वही है जिसने आप पर किताब उतारी जिसकी कुछ आयतें मोहकम हैं जिनका अर्थ स्पष्ट और साफ है और जो मूल किताब का दर्जा रखती हैं और इस किताब की कुछ आयतें मुतशाबह हैं जिनका अर्थ निश्चित नहीं किया जा सकता है और जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वह केवल मुतशाबह आयतों के पीछे लगे रहते हैं ताकि दीन में कोई फित्ना खड़ी करें और इन मुतशाबह आयतों का अर्थ तय कर दें, जब कि इन आयतों के वास्तविक अर्थ को अल्लाह के अतिरिक्त कोई और नहीं जानता और उन लोगों के जो ज्ञान में पूर्ण जानकारी रखते हैं कोई नहीं जानता। सत्यवादी उलमा कहते हैं कि हम इन आयतों पर भी इमान रखते हैं और सभी आयतें हमारे रब की ओर से हैं और बुद्धिमानों के अतिरिक्त कोई भी सीख नहीं पा सकता। ऐ हमारे रब! तू हमें मार्गदर्शक के उपरान्त हमारे मन में टेढ़ पैदा न करना और हमें अपने पास से रहमत प्रदान करना। वास्तव में तू बहुत अधिक देने वाला है। ऐ हमारे पालने वाले! तेरा वादा है एक दिन तू सब लोगों को जमा करेगा और उस दिन के आने में कोई शक नहीं, बेशक अल्लाह अपने वादे का उल्लंघन नहीं करता।

Www.IslamicBooks.Website

ऐ अल्लाह! हमें अपनी इच्छा का मार्ग दर्शा दे और उस पर चलने की शक्ति दे और हमें असत्य से और अवगत कर और उससे बचने की शक्ति दे। आमीन!

बेहतरीन उम्मत

उम्मते मुहम्मदिया को यह प्रमुखता प्राप्त है कि उसे "खैर उम्मत" अर्थात सबसे अच्छी उम्मत का नाम दिया गया है और उस तौहीद का प्रचार करने और कुफ्र और शिर्क को मिंटाने का कर्तव्य दिया गया है।

इरशाद बारी तआला है:

"तुम वह अच्छी उम्मत हो जिन्हें लोगों के सुधार के लिए पैदा किया गया है। तुम नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान भी रखते हो (आले इमरानः ११०)

६. कलमा–ए–तौहीद के प्रभाव

जब कलमा-ए-तौहीद का इकरार सच्चे दिल और सही नीयत से की जाए उसके अतिरिक्त खुलकर और छुपा कर उसके तकाजों पर चला जाए तो व्यक्तिगत और सामूहिक हर प्रकार से बहुत अच्छे और प्रशंसनीय लाभ देखने को मिलते हैं।

यहां कलमा-ए-तौहीद के विशेष प्रभाव लिखे जाते हैं।

१. कलमा-ए-तौहीद में सहमति के परिणाम में हर प्रकार की शक्ति प्राप्त होती है,शत्रु पर विजय और अधिपत्य प्राप्त होता है,स्पष्ट है कि सभी मुसलमान एक दीन और एक आस्था में परस्पर जुड़े होंतो अवश्य उन्हें विजय प्राप्त होगी।

अल्लाह का कहना है:

अनुवाद : और तुम सब अल्लाह की रस्सी को दृढ़ता से थामें रखो

Www.IslamicBooks.Website

ऐ अल्लाह! हमें अपनी इच्छा का मार्ग दर्शा दे और उस पर चलने की शक्ति दे और हमें असत्य से और अवगत कर और उससे बचने की शक्ति दे। आमीन!

बेहतरीन उम्मत

उम्मते मुहम्मदिया को यह प्रमुखता प्राप्त है कि उसे "खैर उम्मत" अर्थात सबसे अच्छी उम्मत का नाम दिया गया है और उस तौहीद का प्रचार करने और कुफ्र और शिर्क को मिंटाने का कर्तव्य दिया गया है।

इरशाद बारी तआला है:

"तुम वह अच्छी उम्मत हो जिन्हें लोगों के सुधार के लिए पैदा किया गया है। तुम नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान भी रखते हो (आले इमरानः ११०)

६. कलमा–ए–तौहीद के प्रभाव

जब कलमा-ए-तौहीद का इकरार सच्चे दिल और सही नीयत से की जाए उसके अतिरिक्त खुलकर और छुपा कर उसके तकाजों पर चला जाए तो व्यक्तिगत और सामूहिक हर प्रकार से बहुत अच्छे और प्रशंसनीय लाभ देखने को मिलते हैं।

यहां कलमा-ए-तौहीद के विशेष प्रभाव लिखे जाते हैं।

१. कलमा-ए-तौहीद में सहमति के परिणाम में हर प्रकार की शक्ति प्राप्त होती है,शत्रु पर विजय और अधिपत्य प्राप्त होता है,स्पष्ट है कि सभी मुसलमान एक दीन और एक आस्था में परस्पर जुड़े होंतो अवश्य उन्हें विजय प्राप्त होगी।

अल्लाह का कहना है:

अनुवाद : और तुम सब अल्लाह की रस्सी को दृढ़ता से थामें रखो

Www.IslamicBooks.Website

और आपस में फूट न डालो।

इसके अतिरिक्त कहाः

अनुवाद : वही अल्लाह है जिसने अपनी मदद और मुमिनीन की सहायता से आपको शक्ति दी और इसी ने मोमिनो के मन में परस्पर मुहब्बत पैदा कर दी। यदि आप धरती की सारी दौलत भी खर्च कर डालते तब भी उनके मन में परस्पर प्यार पैदा नहीं कर सकते थे, परन्तु अल्लाह तआला ने उनमें आपस में मुहब्बत पैदा की, बेशक वह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी है।

वास्तव में विश्वास का विरोध फूट, आपसी लड़ाई झगड़ों, और वंश और गौत्र के कारण पैदा होता है।

जैसा कि अल्लाह का कहना है :

अनुवाद : जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़-टुकड़े कर दिया और दलों में बंट गए, आपका उनसे कुछ सम्बन्ध नहीं।

इसके अतिरिक्त कहा :

अनुवाद : पस इन लोगों ने दीन के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और भेदभाव किया और हर गिरोह उसी में व्यस्त है (और गर्व करता है) जो कुछ उसके पास है।

केवल ईमान और तौहीद का विश्वास ही वह चीज़ है जो सब लोगों को एक प्लेटफार्म पर ला सकता है, इसके अतिरिक्त ईमान और तौहीद का विश्वास ही ''ला इला-ह इल्लल्लाहु'' का सिद्ध प्रमाण है। इस वास्तविक्ता का अवलोकन करने के लिए आप अरब के इस्लाम से पहले और इस्लाम के बाद के हालात का अन्तर देख लें।

२. इस्लामी समाज जब वहदत की दौलत से मालामाल होगा तो कलमा-ए-तौहीद के आदेशों के अनुसार कार्य करने से अमन व सुकून का माहौल होगा और हर व्यक्ति अपने विश्वास के अनुसार हलाल चीज़ों को

Www.IslamicBooks.Website

हलाल समझेगा और हराम से दूर रहेगा। और इसके अतिरिक्त हर प्रकार के ज़ुल्म, ज़्यादती, अत्याचार और निर्दयता से बिल्कुल दूर रहेगा। इस प्रकार आपस में मुहब्बत, सहयोग और भाईचारे का माहौल पैदा होगा।

अल्लाह का कथन है :

अनुवाद : मोमिनों का सम्बंध आपस में केवल भाई–भाई का है।

इस प्रकार जब हम अरब का इस्लाम से पहले और बाद का मुकाबला

करते हैं तो हमारे सामने यह स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है कि अरब वाले इस्लाम के पूर्व अत्यधिक निर्दयी और असभ्य थे, कत्ल और अपराधों पर गर्व करते थे। और लूटमार करते थे। परन्तु जब वह इस्लाम की दौलत से मालामाल हो गए तो उनके बीच भाई चारा और मुहब्बत का न टूटने वाला सम्बन्ध हो गया।

अल्लाह का कहना है:

अनुवाद : मुहम्मद स.अ.व. अल्लाह तआला के रसूल हैं और आपके कुफ़्र की तुलना में सख्त चट्टान की तरह हैं परन्तु आपस में बड़े मेहरबान और नर्म दिल हैं।

इसके अतिरिक्त कहा :

अनुवाद : तुम अल्लाह तआला का एहसान मत भूलो जो उसने तुम पर किया कि पहले तुम एक दूसरे के दुशमन थे। फिर उसने तुम्हारे दिलों को मिला दिया और उसकी कृपा से आपस में भाई–भाई बन गए हो।

३. कलमा–ए–तौहीद (अल्लाह तआला की) धरती पर अल्लाह के शासन को कायम करने और इस्लाम धर्म को गन्दे विचार और गैर इस्लामी दृष्टिकोणों के सामने अत्यन्त साहस के साथ फैलाने का कारण है।

Www.IslamicBooks.Website

जैसा कि अल्लाह तआला का कहना है :

अनुवाद : ऐ लोगो! तुममें से जो ईमान लाए और सद कर्म करे उनसे अल्लाह तआला का वादा है वह उन्हें मुल्क में हुकूमत देगा, जैसा कि उसने उन लोगों को सत्ता दी थी जो उनसे पहले संसार में रह चुके हैं और उनके लिए इस धर्म को शक्ति शाली कर देगा जिसे अल्लाह तआला ने उन के लिए पसन्द किया और उनके डर को अमन में बदल देगा। वह केवल मेरी ही उपासना करेंगे मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराएंगे।

इसलिए अल्लाह तआला ने इस उद्देश्य के पाने को इस नियम पर टिका दिया कि केवल एक अल्लाह की उपासना की जाए इसके साथ किसी दूसरे को शरीक न बनाया जाए, यही कलमा–ए–तौहीद का तकाज़ा और अर्थ है।

४. कलमा–ए–तौहीद को मानने वाले और इसके तकाज़ों के अनुसार कार्य करने वाले को इतमिनान और मन की शान्ति प्राप्त होती है इसलिए कि उसने एक रब की उपासना को फर्ज़ करार दिया जो उसके दिल के इरादों का पता देता है कि वह अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए उसकी उपासन करता है

और उसे पता होता है कि किन कामों से अल्लाह क्रोधित होता है। इस कारण वह उनसे दूर रहता है, उन लोगों के विरूद्ध जो बहुत से खुदाओं को मानते हैं, स्पष्ट है कि उनमें हर खुदा की इच्छा और उद्देश्य दूसरे खुदा से अलग है। जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा है:

अनुवाद : क्या अलग–अलग रब सही है या अकेला अल्लाह तआला ही काफी है जो सब पर विजयी है।

एक और स्थान पर अल्लाह का कहना है :

अनुवाद : अल्लाह एक उदाहरण का वर्णन करता है कि एक गुलाम

Www.IslamicBooks.Website

है जिसके कई मालिक हैं जो आपस में खींचा तानी करते हैं और दूसरी और एक गुलाम है जो एक ही मालिक का है, क्या उन दोनों गुलामों की दशा एक जैसी हो सकती है।

इमाम इब्नुल कय्यम रह० कहते हैं कि अल्लाह ने (इस आयत) में मुशरिक (शिर्क करने वाले) और मोहिद (तौहीद पर चलने वाला) व्यक्ति का उदाहरण दिया है कि मुशरिक व्यक्ति उस गुलाम की तरह है जो ऐसे कुछ लोगों की सम्पत्ति में (गुलाम) है जो झगड़ालू हैं और दुराचरी हैं, इसलिए मुशरिक व्यक्ति जब बहुत से खुदाओं को पूजता है तो उसे उस गुलाम के साथ उपमा दी जाती है जो बहुत से गुलामों की मिल्कियत है वह सब चाहते हैं वह उनकी सेवा करे परन्तु उसके लिए सम्भव नहीं कि वह सबको एक साथ प्रसन्न कर सके, और उसके विरूद्ध मोहिद व्यक्ति, जब एक अल्लाह तआला की उपासना करता है तो उसकी उपमा उस गुलाम के समान है जो केवल एक व्यक्ति की सम्पत्ति है वह अपने मालिक के उद्देश्यों और उसे प्रसन्न रखने के तरीकों को जानता है तो इस प्रकार वह गुलाम शान्ति से रहता है कि वह बहुत से व्यक्तियों के उद्देश्यों को पूरा करने में उलझा हुआ नहीं है, वह किसी भिन्नता का शिकार नहीं क्योंकि उसका मालिक एक है और फिर यह है कि मालिक उससे मुहब्बत भी करता है मुरव्वत के साथ मिलता है और उसे अपने आवश्यक कार्यों में शालीनता के साथ लगाए रखता है। (न्याय कीजिए कि) क्या दोनों गुलाम बराबर है? (ऐलामुल मुकईन, जिल्द–१ पृष्ठ १६७)

५. कलमा–ए–तौहीद के मानने वालों को संसार और प्रलोक में ऊंचाईयां और उन्नति मिलती हैं।

जैसा कि अल्लाह तआला का कहना है :

अनुवाद : अल्लाह तआला की तौहीद पर विश्वास रखो, किसी को उस का शरीक न बनाओ और जो कोई अल्लाह का शरीक बनाता है तो उसकी उपमा उस तरह है जैसे वह आकाश में गिर पड़े, फिर उसे पक्षी

Www.IslamicBooks.Website

उचक लें या तेज़ वायु उसे दूर स्थान पर फेंक दें।

इस मुबारक आयत का अर्थ इस बात का तर्क है कि तौहीद के कारण ही मनुष्य को ऊंचाईयां और उन्नतियां मिलती हैं और शिर्क के कारण नीचता, गिरावट और ज़िल्लत हाथ आती है।

अतएव अल्लामा इब्नुल कय्यम रह० ईमान और तौहीद को सबसे ऊंचे, बड़ाई और गुण के आधार पर आकाश से उपमा देते हैं जिसकी ओर ईमान और तौहीद को चढ़ना और उतरना होता है कि आकाश से पृथ्वी की ओर उसका नुज़ूल (उतरना) होता है और जो व्यक्ति ईमान और तौहीद की दौलत से महरूम (वंचित) है उसकी उपमा उस व्यक्ति जैसी है जो आसमान की ऊंचाई से गिरकर पृथ्वी पर पाताल में पहुंच जाता है जहां अत्यधिक पीड़ा और दर्द का सामना होता है। जो लगातार उसको घेरे रहते हैं, इसके अतिरिक्त ईमान और तौहीद की दौलत से वंचित व्यक्ति उन पक्षी जैसा है जिनके शरीर टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं (बुलंदी से) कोई कहीं गिरता है और कोई कहीं...... इनका गिरना उन शैतानों द्वारा होता है जिनको अल्लाह तआला भेजते हैं कि वह ईमान की दौलत से वंचित लोगों को हवा में तेज़ी के के साथ उलट पलट करते हुए कठोर यातनाओं के हवाले कर देते हैं।

इसके अतिरिक्त ईमान और तौहीद से वंचित की उपमा उस आंधी की तरह है जो उसे अत्यधिक दूर स्थान पर फेंक देती है, वास्तव में उसके अन्दर की इच्छा ही उसे पृथ्वी पर नीचे पटखने और ऊंचाईयों से दूर करने का कारण है।

६. कलमा-ए-तौहीद को मानने वाले की जान, माल और इज़्ज़त सुरक्षित हो जाती है।

नबी स.अ.व. का कहना है :

अनुवाद : मुझे आदेश दिया गया है कि मैं लोगों से लड़ाई करूं जब तक वे कलमा-ए-तौहीद को न मान लें तो मेरी ओर से उनकी जानें

Www.IslamicBooks.Website

उनके माल सुरक्षित हो गए यदि वे कलमा-ए-तौहीद के तकाज़ों और आदेशों को पूरा करेंगे। (बुखारी)

उपरोक्त हदीस में शब्द "बिहक्किहा" से तात्पर्य यह है कि जब लोग कलमा-ए-तौहीद को मानने के बाद उसके और उसके आदेशों का ख्याल नहीं रखेंगे, तौहीद के तकाज़ों को पूरा नहीं करेंगे, शिर्क नहीं छोड़ेगे और इस्लाम के स्तम्भों की ओर ध्यान नहीं देगे तो उनके माल उनका खून सुरक्षिन नहीं रहेंगे उनके माल को उनसे छीन कर माले गनीमत (लूट का माल) के तौर पर मुसलमानों को बांट दिया जाएगा, उन्हें कत्ल कर दिया जाएगा, जैसा कि इस प्रकार के लोगों के साथ नबी स.अ.व. और आपके खलिफाओं ने किया था।

अन्त में मेरा निवेदन है कि इस पुस्तक को बहुत अधिक ध्यान से पढ़ा जाए। वास्तविक्ता यह है कि उपासना हो या मामले हों, सदव्यवहार हो या शिष्टाचार मानव का जीवन सामूहिक हो या व्यक्तिगत, कलमा-ए-तौहीद के बड़े दूर तक पहुंचने वाले प्रभाव उत्पन्न होते हैं।

☆☆☆

Www.IslamicBooks.Website